International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 14-01-2024, Accepted: 13-02-2024, Published: 28-02-2024
Volume 10, Issue 1, 2024, Page No. 56-57

कृशि कार्य में सब्जी उत्पादन का अध्ययन

डॉ. पुष्पा देवांगन[1], डॉ. बलभद्र प्रसाद देवांगन[2]
[1] प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, के. पी. महाविद्यालय, बंधापाली सारंगढ़, छत्तीसगढ़, भारत
[2] प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, अशोका महाविद्यालय, उम्मेदपुर, सारंगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
हमारे देश में सब्जियों का उत्पादन लगभग 72 लाख हे- क्षेत्रफल से 116 मीलियन टन के आस–पास होता है। एफ. ओ. के अनुसार भारतीय आहार में सब्जियां की पूर्ति करने के लिए 2025 तक यह उत्पादन 1600 मीलियन टन तक बढ़ाया जाना जरूरी है। सब्जियों के उत्पादन की वर्षिक विकास दर 2.6 प्रतिशत है जो कम है और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए 4 प्रतिशत की दर वृद्धि की आवश्यकता है। एक प्रगतिशील और स्थिर कृषि विकास के लिए गुणवत्ता के बीज महत्वपूर्ण और बुनियादी निवेश है। राष्ट्रीय बीज नीति 2001 और वीज विधेयक 2004 उदारी कृत आर्थिक वातावरण में तेजी से बीज उधोग वृद्धि के लिए पर्यापत ढाँचा प्रदान करता है। अभी तक के रिर्पोट से पता चलता है कि केवल 20 प्रतिशत से कम भारतीय किसान गुणवत्त पूर्ण बीज का उपयोग करने की स्थिति में है। सब्जियों की खेती को उसके उद्देश्य, उगाने के ढ़ंग एवं बेचने के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। बीज उत्पादन के लिए सब्जियों की खेती, बाग द्वारा सब्जियों की खेती, संसाधनों के लिए सब्जियों की खेती, बाजार के लिए सब्जियों की खेती।

मुख्य शब्दः सब्जियां, उत्पादन, लाभकारी, कृषि कार्य

हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा कृषि उत्पादक देश है, इसके बावजूद सब्जियों का उत्पादन में काफी पिछड़ा है। सुलभ उपलब्धता और उन्नत किस्मों या संकर किस्मों द्वारा सब्जियों की उत्पादकता का स्तर बढ़ाया जा सकता है। पिछले कुछ दशको सब्जियों की कृषि में किसानो द्वारा संकर बीज प्रौद्योगिकी को अपनाने में बढोत्तरी हुई है। टमाटर में 40 प्रतिशत, गोभी में 68 प्रतिशत, बैगन में 82 प्रतिशत और भिंडी में 10 प्रतिशत बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। हालाकि यह प्रौद्योगिकी निवेश व श्रम प्रधान है, परन्तु इसके द्वारा किसानो की लाभप्रदता मे वृद्धि हुई क्योकि उत्पादकता बढ़ गयी है। किसानों द्वारा प्रौद्योगिकी अंगीकरण के इस परिवेश में यह जरूरी हो जाता है कि उन्हे संकर किस्मों के बीज समय व सस्तो दामो पर मिले, परन्तु वास्तविक परिवेश में किसानो को काफी चुनौती का सामना करना पड़ता है। एक तरफ तो किसानो को गुणवत्तपुर्ण बीज नही मिल पाते और दूसरी तरफ निजी कंपनियाँ घटिया या बिना किसी लेबल के बीजो को बहुत महँगा बेच रही होती है।

गुणवत्ता पूर्ण बीज

वाणिज्यिक फसल उत्पादन में बीज एक मूल निवेश है। गुणवत्ता के बीज पर गहन कृषि क्षेत्र में आधिक जोर दिया जाता हैं क्योकि गहन प्रबन्धन के तरीको के तहत यह अधिक प्रतिफल सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख कारक के रूप में माना गया है। एक कुशल फसल उत्पादन में गुणवत्ता पूर्ण बीज एक सीमित कारक है हालांकि, बीज की गुणवत्त को कई मायनो में वर्णित किया जा सकता है।

सब्जी बीज उत्पादनः एक लाभकारी उद्यम

साब्जियों का बीज उत्पादन विशेष रूप से संकर बीजों का उत्पादन एक कुशल गतिविधि है। खेती से जुड़ा एक उद्यम जिसे अपना कर किसान अधिक आय भी कमा सकता है और साथ ही अच्छे बीजों की उपलब्धता की समस्या को भी हल कर सकते है, हालांकि निजी बीज कंपनियाँ अनुबंध खेती द्वारा इसे एक व्यावसयिक आर्थिक गतिविधी के रूप मे कर्नाटक के राने बन्नूर क्षेत्र में कर रहे है। इस विषय पर तीन वर्ष पूर्व (2011) में एक क्रियात्मक शोध परियोजना शुरू की गयी। इस परियोजना के तहत पूसा संस्थान की वनस्पति किस्में के खुले में परागण होने वाली व संकर किस्मों के वीजों के उत्पादन को एक उद्यम के रूप में करने के लिए किसानां को सझम बनाना था। उच्च उपज किस्में के बारे में जागरूकता बढ़ाना, किसानो की क्षमता निर्माण करना व गाँव स्तर पर गुणवत्त के बीज की उपलब्धता को बढ़ाना इस परियोजना का लक्ष्य था। यह परियोजना दिल्ली के दो ग्रामों में व हरियाणा के दो गाँवो में लाभू की गई।

बीज उत्पादन की संभावना आंकना

परियोजना ग्रामो की स्थिति विश्लेषण से यह पता लगा कि किसान या तो पिछले साल के बचाए गये अपने बीज का उपयोग करते है या दिल्ली के इंदिरा बाजार, फरीदाबाद की पुरानी मंडी या रोहतक बाजार से खरीद रहे थे। वे निजी कंपनियों के बीज खरीद रहे थे जो बहुत मंहगे मिलते थे। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान बीज कम निवेश के साथ तैयार किये जा सकते है और किसानों को अधिक रिर्टन प्राप्त करा सकते है। कई बार तो यह कंपनियों को अधिक रिर्टन प्राप्त करा सकते है। कई बार तो यह कंपनियाँ ओ. पी. वी. किस्मो को ही संकर किस्म कहकर किसानो से काफी पैसे ठग रही थी। कीट रहित नेट हाउस (जालधर) में बीज उत्पादन तकनीकी अगर किसान खुद अपनाए तो वो अपने लिए व अपने जैसे और किसानो के लिए गुणवत्ता पूर्ण बीज बना सकते है।

संस्थान के वैज्ञानिको का तकनीकी हस्तक्षेप

किसान–वैज्ञानिक वार्तोलाप का आयोजन किया गया और किसानो को पूसा संस्थान का दौरा किया गया जहाँ वैज्ञनिको ने उन्हे प्रयोगात्मक प्रक्षेत्रों में फसलो का दृश्य अनुभव कराया। बीज उत्पादन के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना, उपलब्धि प्रेरणा उन्मुखता वृद्धि करने के लिए उद्यमी प्रेरणा लैब्स का आयोजन किया गया।

अध्ययन करके गांवो से संभावित बीज उत्पादन उद्यमियों का चयन किया गया था और तिगीपुर ग्राम में किसानो के समूह उनकी कृषि भूमि की कुछ टुकड़ो पर बीज उत्पादन लेने के लिए प्रेरित किए गये।

परियोजना गांवो का परिवेशानुसर उपयुक्त फसलों और किस्मों का चयन किया गया जो शोधकर्ताओं प्रजनकों और किसानों ने सहभागिता दृष्टिकोंण का उपयोग कर मिल जुलकर किया। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान परिसर में आयोजित वनस्पति विज्ञान क्षेत्र का दिन मनाया गया।

रसोईघर के लिए सब्जी की खेती
सब्जी उगाने का यह प्राचीन ढंग है। प्राचीन समय से प्रत्येक व्यक्ति अपने उपभोग या खाने के लिए सभी भोज्य पदार्थ स्वयं उगाता था। यह खेती घर के पास स्थिति भूमि में की जाती है। अतः इसे रसोईघर की सब्जियों का उत्पादन या नया नाम पौष्टिक आहार का बगीचा कहते है।

पौष्टिक गृह वाटिका के लाभ
- **स्वास्थ्य संबंधी लाभः** यह मनोरंजन एवं व्यायाम का अच्छा साधन है। इसमे शारीरिक श्रम करने से शरीर की मांसपेशियाँ मजबूत रहती है तथा सब्जियों के सेवन से शरीर स्वस्थ रहता है।

- **धन सम्बन्धी लाभः** इससे बाजार से सब्जियाँ कम से कम खरीदनी पड़ती है जिससे पैसे की बचत होती है।

- **समय की बचतः** चूंकि हम जब चाहे इसके माध्यम से ताजा एवं अच्छे गुणों वाली सब्जियों को प्राप्त कर सकते है साथ ही बाजार जाकर सब्जी खरीदने में जो समय बर्बाद होता है, उससे बचा जा सकता है।

- **प्रशिक्षण संबंधी लाभः** यह प्रशिक्षण का अच्छा साधन है, क्योकि इससे घर के बच्चों को इसे देखने का एवं प्रश्न पूछने का अवसर मिलता है। इससे कृषि के प्रति उनका शुरू से ही झुकाव पैदा होगा और आगे चलकर वे एक उन्नतशील किसान बन सकते है।

स्थान का अधिकतम उपयोग निम्न प्रकार से कर सकते हैः
1. बाग के चारों तरफ बाड़ का प्रयोग करें जिससे तीन तरफ वर्षा एवं गर्मी वाली, लतादार सब्जियों के पौधों को चढ़ाना चाहिए।
2. मेड़ों पर (दो क्यारियों के बीच) जड़ो वाली सब्जियों को उगाना चाहिए।
3. फसल चक्र को अपनाना चाहिए।
4. बाग के दोनो तरफ दो कोणो पर दो खाद के गड्ढे होने चाहिए।

फसल की व्यवस्था
बाग की बोआई करने से पहले ही योजना बना लेनी चाहिए जिससे निम्न बाते आती हैः
1. क्यारियों की स्थिति।
2. उगायी जाने वाली फसल।
3. बोने का समय।
4. लगातार फसले लेना।
5. पौधे एवं कतारो के बीच की दूरी।

बाजार के लिए सब्जियों की खेती
यह सब्जी उत्पादन की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत सब्जियों के उत्पादन स्थानीय बाजारों के लिए किया जाता है। यह सब्जियों की खेती मे सबसे गहनतम खेती की किस्म हैं। पहले जब यातायात के साधन का आभाव था तब इसकी उपयोगिता शहर 15–20 किलोमीटर के क्षेत्र तक ही सीमित था।

कुछ फसलों के बीज उत्पादन से किसानों ने क्या आर्थिक लाभ प्राप्त किया वह निम्न दिया गया हैः

तालिका 1

उत्पाद	किस्म का बीज
प्रक्षेत्र स्के. मी.	500
बीज उपज किग्रा	07.डंत
बीज की लागत रु.	7700
उत्पादन की लागत रु.	4500
शुध्दलाभ प्रति हे. लाख में	0.64

(**स्त्रोतः** कृषि एवं सहकारिता मंत्रालय)

प्लाट नं. सब्जियों के नाम
1. पत्तागोभी के साफ सलाद अंतः फसल एक रूप में ग्वारफली।
2. फूलगोभी के साथ गांठगोभी अंतः फसल के रूप में–बोदी (ग्रीष्म ऋतु), बोदी (वर्षा ऋतु), मूली, प्याज
3. आलू, बादी, फूलगोभी (अगेती फसल)
4. बैगन (लंबा) के साथ पालक अंतः पालक के रूप में। भिण्डी के अथ चौलाई अंतः फसलों के रूप में।
5. मिर्च, भिण्डी

निष्कर्ष
किसानों को श्गुणवत्ता के बीज की उपलब्धता से उन्हे निश्चितंता हो गयी तथा उनकी आय में वृद्धि हुई है। उद्यम विकास से किसानो को रोजगार के साथ–साथ बढी हुई आय मिलनी शुरू हो गई है। इन किसानो की सफलता देखकर अन्य ग्रामों के किसान भी ऐसा करने की सहमती जता चुके है। इस तरह से एक प्रतिकृति प्रभाव भी पड़ोसी गांवो में व उसी ग्राम के अन्य किसानो के व्यवहार में परिलक्षित हो पाया है। खेत की जुताई से पहले 8–10 किन्वटल प्रति कनाल गोबर की अच्छी सड़ी खाद खेत में अवश्य डाले। गोबर खाद मिट्टी को भुरभुरा बनाती है तथा उसमे पानी रोकने की क्षमता बढ़ाती है। गोबर की खाद के अतिरिक्त अच्छा उत्पादन लेने के लिए रसायनिक खादो का प्रयोग करना भी अतिआवश्यक है। भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ 70 प्रतिशत लोगो की आजीविका आज भी कृषि पर आधारित है। आजादी के दशक के बाद खाद्यान्न उत्पादन की दशा में देश ने आधारित सफलता अर्जित कर ली है साथ ही साथ सब्जी उत्पादन भी 16.5 मिलियन टन (1960–61) से बढ़कर 182.19 मिलियन टन से भी ज्यादा हो गया है। साब्जियों की खेती में किसान भाइयों की बीज चुनाव व पौधा लगाने से लेकर फसल आने तक प्रत्येक अवसर पर उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ती है, उचित जानकारी के आभाव मे साब्जियों की भरपूर पैदावार नहीं ले पाते।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, राजीव (2007) प्रकृति द्वारा स्वास्थ्य सब्जियां, डायमंड बुक डिपो, मेरठ।
2. दुबे एवं विवेक (2012) सब्जियों की खेती एवं पुस्पोत्पादन, भारती भण्डार, प्रकाशन, मेरठ।
3. मण्डल, सुनील कुमार (2009) सब्जियों के प्रमुख कीट रोग एवं प्रबंधन, बायोटेक पब्लिकेशन्स, दरियागंज, दिल्ली।
4. 4.बागवानी विभाग (2019) बागवानी भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, बेगलूरु।
5. चौरसिया, सूर्यनाथ (2015) सब्जी पाठशाला, भा. कृ. अनु. प., वाराणसी, उ.प्र.।